"पैलिएटिव केयर"

एक दर्शन

बी.जे. राघो

परिचय:

पैलिएटिव केयर (उपशामी परिचर्या) शब्द निकला है लैटिन भाषा के शब्द "पैलियम" से जिसका अर्थ है "ढक्न"। अन्य अर्थों मे कुछ अन्य शब्द छिपना, ढापना, लबादा आदि इसके पर्याय हो सकते हैं अर्थात् बीमारी के असाध्य होते हुए भी कष्टकारी लक्ष्णों को इलाज द्वारा ढंक देना जिसका वास्तविक उद्देश्य मरीज को आराम, सुख, सान्तवना या संतोष देना एवं जीवन मे गुणवत्ता प्रदान करना है।

इस सेवा के अन्तर्गत असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों को तीन प्रकार की सेवा दी जा सकती है -

(१) अत्यंत गंभीर रोगी का हर संभव इलाज

(२) लक्ष्णों जैसे दर्द, भूख न लगना, कब्जियत, दस्त, मुंह सूख जाना, कमजोरी, नीद न आना, पैरों की सूज़न, श्वास की समस्याएं, पेट की तकलीफें, बेचैनी, दवाओं के कुप्रभाव आदि से मुक्ति के प्रयत्न।

(३) मृत्यु शैय्या पर पड़े व्यक्ति को अंतिम समय तक पूरा आराम देना, उसके जीवन की गुणवत्ता बनाए रखना एवं मृत्यु तक सम्मानित जीवन हेतु जागरूकता एवं हर संभव सहायता पहुंचाना। वास्तव में "पैलिएटिव केयर" जीवन में दिनों को नहीं जोड़ती परंतु बचे हुए दिनों में जीवन अवश्य जोड़ती है।

लेखक इन सर्विस एजुकेशन सेल, सर सुन्दर लाल चिकित्सालय, काशी हिन्दू विश्वद्यिालय, वाराणसी के सचिव हैं।

पैलिएटिव केयर का कार्य क्षेत्र

१. यह " सम्पूर्ण स्वास्थ्य " के सिद्धान्त की पोषाक है अर्थात् मरीज के न सिर्फ शारीरिक परन्तु मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं पर भी समुचित ध्यान देती है जो व्यक्ति के शरीर, मन एवं आत्मा को पर्याप्त आराम पहुंचाते हैं।

२. मरीज के साथ ही साथ उसके परिवार को भी सेवा की आवश्यकता वाली इकाई मानती है।

३. असाध्य रोगों – जैसे कैन्सर एवं एड्स – से ग्रसित रोगियों के साथ ही वृद्धावस्था पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है अत: इसका कार्यक्षेत्र " पारिवारिक विछोह" जैसी परिस्थितियों तक से निपटने, कभी-कभी इस दुर्घटना के बाद हुए नुकसान के बाद पुन: पूर्वस्थिति तक पहुंचने या " रिहेबिलिटेशन " तक भी बढ़ाया जा सकता है। ताकि रोगी अपनी पूर्व क्षमताओं को पुन: प्राप्त कर या लगभग उस स्तर तक पहुंच कर उपयोगी जीवन जी सके।

अत:

(१) " पैलिएटिव केयर " जीवन को पूरा मान देती है।

(२) बीमारी या मृत्यु को सामान्य यथाक्रम मानती है।

(३) मृत्यु के न तो " समयपूर्व " वरण और न ही अनावश्यक विलम्ब की पक्षधर है।

(४) रोग के लक्षणों के निवारण विशेष तौर पर दर्द निवारण में प्रमुख भूमिका निभाती है।

(५) एक ऐसा सहयोगात्मक कर विकसित करती है जो रोगी एवं उसके परिवार की देखभाल एवं रोगी की मृत्यु के पश्चात् परिवार के दुखों को बांटने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

(६) " पैलिएटिव केयर " की प्रथम आवश्यकता यही है कि प्रत्येक व्यक्ति जीवन को बहुमूल्य समझे, अपना जीवन दर्शन विकसित करे, जीवन का अर्थ समझे, मृत्यु के विषय, अपने अनुभवों से सीखे, ईश्वर पर विश्वास करे, जीवन को सार्थक बनाए, अपने अपने हृदय को शुद्ध रखे एवं अपनी भटक जाने की आदत को त्यागे।

कौन करेगा "पैलिएटिव केयर"?

चिकित्साकार्य में लगे हुए सभी व्यवसाय के प्रतिनिधियों की टीम के द्वारा ही पैलिएटिव केयर संभव है जो एक चित्त होकर रोगी एवं उसके परिवार की सेवा करने हेतु तत्पर हों तथा आपस में बराबरी का संबंध रखते हों।

यह सदस्य उपचारिकाएं, चिकित्सक, सोशल वर्कर, फिजिओथेरापिस्ट, डाइटीशियन आदि होते हैं।

एक टीम के रूप में इनके कार्य सहयोग, अपने अपने व्यवसायों की विशेशज्ञता तथा मरीज पर योजनाबद्ध सेवा नियोजन के साथ ही एक दूसरे के कार्यों की पूरकता पर निर्भर होते हैं।

पैलिएटिव केयर टीम

यूं तो चिकित्सा क्षेत्र का परम्परागत टीम में सदैव चिकित्सक ही नेतृत्व प्रदान करता था

परन्तु आधुनिक समय में वरिष्ठ उपचारिका या नर्स बहुधा यह जिम्मेदारी निभाते हैं इससे चिकित्सक को अनावश्यक समय एवं शक्ति खर्च नहीं करनी पड़ती एवं वे चिकित्सकीय कार्यों में पूरा समय दे पाते हैं।

भारत में ऐसे प्रयोगों की अत्यंत आवश्यकता है। फिर भी नेतृत्व का प्रश्न प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं। अगर उपचारिका नेतृत्व में हो तो यह आवश्यक है कि उसकी जिम्मेदारियां भली प्रकार परिभाषित हों।

पैलिएटिव केयर के वातावरण में नेतृत्व प्रदान करने वाला एक सेवक के रूप में होता है फिर भी उसमें निर्णय लेने की क्षमता के साथ ही साथ तनाव एवं विरोधों को बर्दाश्त करने एवं उन्हे सुलझाने की क्षमता होना आवश्यक है। उसका स्तर भी कम से कम टीम के किसी भी अन्य सदस्य जितना तो होना ही चाहिये।

सिर्फ टीम शब्द का प्रयोग कर देने मात्र से ही यह सफल टीम नहीं बन जाती परन्तु मरीजों/दुखियों के प्रति समर्पित व्यक्ति ही टीम को चला सकता है।

अगर टीम के सदस्य खुले हृदय से अपने विचार रखने वाले, लचीले (प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाने वाले) एवं अपने कार्यों में सुधार करते रहने की इच्छा रखने वाले हों तो पैलिएटिव केयर का अधिकतम लाभ रोगियों को मिल सकता है।

एक पूर्ण परिपक्व, समझदार, अनुभवी, कार्यकुशल, व्यवहार कुशल, सक्रिय, आस्तिक एवं समर्पित व्यक्ति किसी भी पैलिएटिव केयर टीम के लिए वरदान होता है। उसमें बार-बार क्षमा कर देने तक बड़प्पन होना एवं कार्य के प्रति लगन होना जरूरी है, साथ ही उसे इस हद तक साहसी होना भी आवश्यक है कि वह कम से कम पलायनवादी न हो।

पैलिएटिव केयर में रोगी को बार बार विभिन्न बहिरंग विभागों में रिफर करना या भेजना तथा चिकित्सकों का एक दल के रूप में भर्ती मरीजों का मुआयना या निरिक्षण उचित नही माना जा सकता। अत: चिकित्सक एक बार में एक ही मरीज का निरिक्षण करता है। उसके साथ पैलिएटिव केयर टीम के सदस्य होते हैं जो सेवा की आवश्यकता वाले किसी भी पक्ष को अछूता नहीं छोड़ते परन्तु रोगी के जीवन के हर पहलू पर विस्तृत चर्चा करते हैं एवं उसका इलाज करते हैं।

चिकित्सक एवं उपचारिका एक ही गाड़ी के दो बराबर बराबर चक्कों के समान हैं। अगर चिकित्सक "बीमारी" पर ध्यान केन्द्रित करता है तो उपचारिका "मरीज" पर, एक ही बीमारी से ग्रसित होने पर भी अलग अलग लोगों पर बीमारी की प्रतिक्रिया, दवाओं की प्रतिक्रिया, लिंग , आयु अलग-अलग होते हैं एवं इलाज भी अलग अलग हो सकता है। इतिहास गवाह है जब जब चिकित्सक प्रशासकों ने अपने चक्के को बड़ा एवं उपचारिका के चक्के को छोटा करने की कोशिश की है तब तब गाड़ी आगे बढ़ने की जगह गोल - गोल घूमी है। मैं मिसेज़ नरेन्द्र नागपाल, जो नर्सेज़ की राष्ट्रीय एसोसिएशन टी०एन०ए०आई की जनरल सेक्रेटरी हैं, की यह बात कभी नहीं भूल पाता हूं कि ये दोनो प्रोफेशन मेडिकल और पैरामेडिकल नहीं, परन्तु "मेडिकल" ही हैं। हकीकत यह है कि यह एक "डबल चेक" सिस्टम है जो मरीज के हित में एक दूसरे की निगरानी करता रहता है। ज्ञान एवं अनुभव का एक अनोखा मिलन। वे एक दूसरे के दुश्मन नहीं होते कि युद्ध का मोर्चा खोल दें और न ही इतने मित्र की जानबूझकर की गई गलतियों को छिपाते रहें। आज " पैलिएटिव केयर " को इसी नेक, संतुलन की आवश्यकता है। हर पल सीखते रहने की चाह इसका मूल मंत्र है।

दरअसल पैलिएटिव केयर न सिर्फ संभव दवाओं द्वारा इलाज की पक्षधर है परन्तु बगैर दवाओं के अन्य विधियों द्वारा भी शरीर के कष्टों को दूर करने की पक्षधर है जैसे-

मरीज को संतोष प्रदान करने में उसकी व्यक्तिगत, शारीरिक साफ सफाई (नहाना, दांतों की देखभाल, नाखूनों की देखभाल, बालों की देखभाल, मालिश, मरीज को छूकर बात करना, साफ सुथरे वस्त्र) मरीज को आनंद तो प्रदान करते ही हैं परन्तु रोगी से संवाद स्थापित करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। उचित खानपान के महत्व को समझना मरीजों के अधिकारों को दिलवाना (जैसे-उसे उसकी बीमारी के संबंध में पूरी जानकारी देना, बीमारी के प्रभाव एवं जीवन पर खतरे के विषय में सही जानकारी देना एवं अगर चिकित्सक की मानवीय समझ के अनुसार उसके बाकी बचे हुए दिनों का अनुमान लगाया जा सकता हो तो इसकी भी जानकारी देना एवं जीवन के बचे समय में, बाकी रह गए कार्यों को पूरा करने की जागरूकता पैदा करना एवं बेहतरीन संभव जीवन जीने में हर प्रकार से मदद करना आदि)। फिर चाहे वह बिस्तर पर लंबे समय तक पड़े रहने के कारण होने वाले दुखदायी फोड़ों से बचाव ही क्यों न हो? मुझे लेसर चिकित्सा द्वारा इन फोड़ों को ठीक होते देखने का सुअवसर प्रिंसेज़ एलिस होसपिस इप्सविच में मिला एवं मैं क्रिस पियर्स जो प्रिंसेस एलिस हासपिस की नर्सिंग सुपरिन्टेंडेन्ट हैं का सदैव आभारी रहूंगा।

मानवमात्र को मृत्यु की सुनिश्चितता एवं जीवन को समाजोपयोगी बनाने के संबंध में जानकारी, मृत्युउपरांत परिवार को सांत्वना एवं बीमारी से बचाव के संबंध में हर संभव कोशिश करना। आसपास के वातावरण की सुरक्षा, मनपसंद संगीत, या पालतू जानवरों, पक्षियों (भारत में कुत्ते, तोता, मैना, रंगीन मछलियों) आदि की देखभाल या टिकिट संग्रह, सिक्का संग्रह जैसी गतिविधियों द्वारा आनंद या मनोरंजन। अपने दुखों को कम करने की कोशिश एवं सही समय पर आदरपूर्ण मृत्यु को स्वीकार करने में सहायता करना।

भावनात्मक एवं मानसिक व्यथाएं

तनाव, बीते दुखमय क्षणों की यादें, आर्थिक चिंताएं, परिवार के सदस्यों के आपसी संबंधों में कडुआहट, नास्तिकता, संवाद का अभाव या अकुशलता, निराशा, मित्रों का अभाव, आदि

ऐसे कारण हैं जिन पर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता होती है। रोगी चाहता है कि जैसे उसने सभी को उनकी गलतियों के लिए माफ कर दिया वैसे ही सब उसे माफ कर दे वह आत्मग्लानि से मुक्ति चाहता है। जीवन के इस अंतिम पड़ाव पर उसे कानूनी एवं वित्तीय सलाह की आवश्यकता भी होती है। ऐसे कार्यो को इंग्लैण्ड में विशेषज्ञ नर्सेज करती हैं जिन्हे "मैकमिलन नर्सेज" कहा जाता है। हेमरस्मिथ अस्पताल की मार्ग्रेट हेडरली, आइलिन थामस तथा हेलन हाऊस की आई०बी०वाडस्ले और एरिक तथा इप्सविच अस्पताल की हैदर स्टुवर्ट ऐसे ही स्टार मैकमिलन नर्सेज हैं जिनके कार्यो की मैं पूरी पूरी प्रशंसा करता हूं।

आध्यात्मिक देखभाल

धर्म और धार्मिकता दो अलग अलग बातें हैं। किसी धर्म को मानने वाला धार्मिक हो यह आवश्यक नही। बाहरी रूप से किसी विशेष
धर्म मानने वाले की पहचान होती है। परन्तु धार्मिकता बाहरी दिखावा नहीं परन्तु आन्तरिक या हृदय की शुद्धता है। क्योंकि मन ही सबसे धोखा देने वाली वस्तु है। अतः उसी व्यक्ति का हृदय शुद्ध हो सकता है जो लगातार ईश्वर के साथ चलते हुए, उसकी सहायता से अपने आपसे हर समय युद्ध करता रहता है। मनुष्यों से हम बहुत कुछ छिपा सकते हैं परन्तु ईश्वर से कुछ भी छिपाना संभव नहीं।

जब-जब हम झरने, नदी, पर्वत, चिड़ियां, पेड़, फूलों आदि को देखते हैं तो उस रचयिता को स्मरण करते हैं।

ईश्वर को कहीं खोजने की आवश्यकता नहीं। परन्तु यह जानने की आवश्यकता है कि उसने हमें खोज लिया है। वह अत्यन्त न्यायी, पवित्र, एवं प्रेमी परमेश्वर है जिसने हर एक मनुष्य के हृदय में अपना निवास बना रखा है। प्रत्येक मनुष्य को विवेक एवं बुद्धि दी गई है वह जानता है सही क्या है और गलत क्या है। फिर भी जब जब हम जानबूझकर सत्य को अधर्म से दबाने की चेष्टा करते हैं तो संकट में पड़ते हैं। आंखों की अभिलाषा, शरीर की अभिलाषा एवं जीविका का घमण्ड हमें भ्रमित करते हैं।

उपरोक्त बातों को पहले खुद समझना है फिर दूसरों को समझाना है।

प्रिंसेज एलिस होसपिस स्टाफ की सीनियर स्टाफ नर्स सोसन हालात का मानना है कि "जब तक आशा है तभी तक प्रार्थना भी हो सकती है" वे आगे कहती हैं "मरना" सत्य होना नहीं परन्तु जीवन का पूर्ण विकसित होना है। जब एक मनुष्य मरता है जिसने अपना जीवन खराई से व्यतीत किया तो वह इस जीवन के बाद अनंत जीवन में प्रवेश करता है ऐसे समय में ईश्वर का सहायक हाथ साफ दिखाई देता है जो उसे इस दुनिया से उस दुनिया तक प्रेमपूर्वक ले जाता है।

चिकित्साकार्य में लगे व्यक्तियों को रोगी की " आध्यात्मिक देखभाल" मौखिक होकर नही परन्तु अपनी सेवा द्वारा करनी चाहिये। स्मरण रहे "कार्य शब्दो से ज्यादा प्रभावी होते है"।

बीमारी से बचाव

अच्छा चिकित्साकर्मी या सेवक वही है जो स्वस्थ व्यक्ति को भी निरंतर स्वस्थ रहने की प्रेरणा दे। वह चिकित्सक या सेवक कभी भी अच्छा नहीं माना जा सकता जो सिर्फ बीमारों का ही इलाज करता हो। वातावरण को प्रदूषित कर, चाहे वह जंगलों की कटाई हो, आस पास के वातावरण को गंदा रखने की प्रवृति, सिर्फ अपना ही हित साधने की लालसा, दूसरों का नुकसान कर खुश होने का पागलपन, परजीवी होने का पिछड़ापन, सामाजिक नजरिए का आभाव, स्वछंद रहने की आदिमयुगीय इच्छा, सब कुछ जानबूझकर भी नैतिकता को परे रखने की लापरवाही या महज मानवीय कमजोरी, हमने पहले ही आत्मघाती कदम उठाया है अब दूसरे आत्मघाती कदम से विमुख रहने की चेतावनी देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

सिगरेट, तम्बाकू जैसे हानिकारक पदार्थों का सेवन न करें। यह वैधानिक चेतावनी आप भली भांति जानते हैं।

फैक्टरियों के अन्दर व्यवसायिकता से जुड़े विस्फोटों एवं उनका हानिकारक कूड़ा करकट, जीवनदायी नदियों, तालाबों में डालकर हमने खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है इससे जल जीवन पर संकट तो आया ही है साथ ही "कैंसर जैसे भयानक रोगों से ग्रसित रोगियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

मैं यहां यह प्रश्न पूछना चाहूंगा, कितने हैं जो उपरोक्त चेतावनियां पढ़कर भी इन हानिकारक वस्तुओं एवं आदतों का परित्याग कर सकेंगे? उन्हे क्या कहा जाए जो स्वयं सिगरेट तम्बाकू, सूरती का प्रयोग कर यह देखना चाहते हैं कि मुझे कैंसर होता है कि नही? गांवों में या शहरों में हमें वातावरण सुरक्षा दल बनाने चाहिये परन्तु हर हालत में मानवाधिकारों का हनन नहीं होना चाहिये।

आज ओजोन पर्त टूट चुकी है, कही एसिड की वर्षा होती है, कहीं मौसम में अस्थिरता तो कहीं रासायनिक तत्वों द्वारा प्रदूषण। ये वे जख्म हैं जो मानव ने खुद इस ग्रह पर रहनेवालों पर आमंत्रित किए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय परिवार वर्ष संदर्भ में परिवार की चर्चा के बिना सब कुछ अधूरा सा लगता है। पति का पत्नी से एवं पत्नी का पति से विश्वासघात पूरी मानवजाति पर एक अभिशाप बनता जा रहा है इसका असर बच्चों की उपेक्षा एवं उनके प्रति लापरवाही के रूप में प्रगट हो रहा है एवं बच्चे नशीले पदार्थो की गिरिफ्त में आते जा रहे हैं एक ही सुई द्वारा नशीले पदार्थो को लेने की प्रवृति के

कारण एड्स के रोगियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। मैं अपने प्यारे देशवासियों को यह स्मरण दिलाना चाहता हूं कि "परिवार" सदैव हमारी शक्ति रहा है, हमारे परिवार टूटने न पाएं यह हमारी ज़िम्मेदारी है। परिवार का बने रहना " पैलिएटिव केयर" की दृष्टि से भी उपयोगी है क्योंकि तब हमे स्वयं सेवकों पर निर्भर रहने की ज्यादा आवश्यकता नहीं होगी।

हमारा परिवार भेड़ों के झुण्ड सा परिवार होना चाहिये जिसके सदस्य साथ-साथ चलते हों एवं संबंधों की गर्माहट हर पल महसूस करते हों। जब जब भी मैं नैतिकता की चर्चा करता हूं तब तब बहुत सारे प्रश्न उठ खड़े होते है, निराशा से ग्रसित लोग कभी कभी मुझ पर प्रश्नों की बौछार करते हुए यह पूछते हैं कि नैतिकता कहां है? मैं उन सभी को यह बता देना चाहता हूं कि "नैतिकता" एक व्यक्ति, एक गांव, एक शहर या एक देश में सीमित नहीं हो सकती हमे समस्त मानवजाति के संदर्भ में इस विषय पर सोचना होगा। यह सत्य है कि समस्त मानवजाति कभी नैतिक नहीं रही परन्तु वह कभी पूरी तौर पर अनैतिक भी नहीं रही। अतः प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत तौर पर सोचना है कि मैं कैसे इसे स्थापित करूँ एवं ऐसा वातावरण बनाऊं कि आने वाली पीढ़ियां नैतिक हो सकें।

मुझे विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह नारा सदैव लुभाता रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोचिए एवं क्षेत्रीय स्तर पर कार्य कीजिए। वास्तव में हर एक व्यक्ति, परिवार, समाज जो कुछ करता है उसका असर राष्ट्रीयता की सीमा तोड़ता हुआ समस्त मानवजाति पर ही अपना प्रभाव दिखाता है इसलिए हमें बहुत सोच समझकर अपनी इस धरोहर "परिवार" को सुरक्षित रखना है यही वह प्रयोगशाला है जहां सब कुछ बनता एवं बिगड़ता है।

आज हमारे वृद्ध, अकेलेपन, उदासी, आर्थिक तंगी एवं वृद्धावस्था में होने वाली स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं चूंकि वृद्धावस्था में शारीरिक कमजोरी के साथ ही साथ, शरीर की सुंदरता भी चली जाती है। अतः नई पीढ़ी उन्हे वह मान नही देती। कभी कभी तो परिवार के लोग उन्हे छूना भी पसंद नही करते। यह अलग बात है कि वे यह नहीं सोच पाते कि उन्हें भी इसी दौर से गुजरना है और अगर हमने अपने पूर्वजों की सेवा नही की तो हमारी वृद्धावस्था में हमें कौन पूछेगा? "पैलिएटिव केयर" इस "नान टच टेक्नीक" का विरोध करती है। एवं मानती है कि हमारे वृद्ध आदरणीय प्रेमी, धार्मिक, सहनशील एवं अनुभव से भरे हुए हैं। हमें उनकी सेवा करनी है। उन्हे समय देना है, प्यार देना है एवं उनका आशीर्वाद लेना है क्योंकि वे ही हमें जीवन का अर्थ समझा सकते हैं।

पैलिएटिव केयर स्वच्छता, मानवता, नैतिकता, परिपक्वता, आत्मियता, धार्मिकता एवं सही व्यक्तित्व का संरक्षण करने प्रकृति प्रद जल, वायु, फल फूल , बन, जीवों का लाभकारी सीमित उपयोग करने, जीवन के मूल्य को समझने, सही जीवन शैली विकसित करने, निश्चित मृत्यु को सामान्य रूप से स्वीकारने, जीवन को समाजोपयोगी बनाने में सहायता के अलावा, मानवाधिकारों को स्थापित करने की चेष्टा करती है।

मेरा विश्वास है कि इस लेख के माध्यम से न सिर्फ रोगियों के इलाज, लक्षणों से मुक्ति के संबंध में आवश्यक वातावरण बनेगा। परन्तु उन मरीजों की ओर भी लोगों का ध्यान आकृष्ट करने में सफल होऊंगा जिनकी मृत्यु लगभग सुनिश्चित हो जाती है और बचे हुए जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने की भारी जिम्मेदारी परिवार, समाज, और देश पर आ पड़ती है।

जीवन के इन अंतिम दिनों में रोगी का परिवार, मित्र, समाज, सरकारी संस्थाएं अन्त समय तक उसे वही प्यार देते रहें और रोगी अकेलेपन, गरीबी, आर्थिक तंगी की यातना से मुक्त होकर एक आदरणीय प्राकृतिक मृत्यु का वरण कर सके एवं अंतिम क्षण तक प्रतिष्ठापूर्ण उपयोगी जीवन जी सके तो मै अपने प्रयास को सफल समझूंगा।

भारत में "पैलिएटिव केयर" विकास

मैं कैंसर रिलिफ इण्डिया, मैकमिलन फंड एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन का आभारी हूं जिनके संरक्षण में पैलिएटिव केयर दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रही है।

२६ से २९ जनवरी १९९४ तक स्वतंत्रता भवन, बी०एच०यू०, वाराणसी में प्रथम अंर्तराष्ट्रीय पैलिएटिव केयर कांफ्रेंस हुई जिसके आरगनाइजिंग सेक्रेटरी प्रोफेसर अकरम लाल, (चेयरमैन, इन सर्विस एजूकेशन सेल) थे। इस कांफ्रेंस में सर्वसम्मति से प्रोफेसर के० पाण्डेय को पैलिएटिव केयर सोसाइटी का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। पैलिएटिव केयर दर्शन के प्रचार प्रसार मे अब निरन्तर वृद्धि हो रही है।

भारत मे यह दर्शन अभी नया ही है। असाध्य रोगों से ग्रसित रोगियों के लिए होम केयर (घर पर देखभाल) एवं हास्पिटल केयर (अस्पताल में देखभाल) के परम्परागत स्थल तो हैं ही परन्तु विशेष रीति से डिजाइन्ड निर्मित स्थल जिन्हे होसपिस कहा जाता है का आभाव है। बम्बई में अवेदना आश्रम एवं मद्रास में जीवोदया होसपिस विशेष तौर पर उन रोगियों के लिए बनाए गए है जो असाध्य रोगों से पीड़ित तो होते ही हैं परन्तु जिनके जीवन के दिन गिने हुए ही होते हैं। इतना सब होने के बावजूद होसपिस सेवा एक सेवा शैली ही मानी जाती है न कि स्थान विशेष।

२६ जनवरी १९९५ को खंडेश्वरी बाबा उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय में पैलिएटिव केयर रूरल सेन्टर की स्थापना की गई जो चाँदपुर, पोस्ट मुस्तफाबाद (विकास खण्ड चिरईगांव) वाराणसी में स्थित है। मेरा अनुमान है कि यह भारत का प्रथम

पैलिएटिव केयर रूरल सेन्टर है।

मैं डा० वेदप्रकाश मिश्र का आभारी हूं कि उन्होंने स्कूल मैनेजर के रूप में इस सेन्टर को खोलने मे न सिर्फ पूरा सहयोग दिया परन्तु इस दिशा में आवश्यक परिश्रम भी किया।

इस सेन्टर पर स्थापना दिवस के अवसर पर ही एड्स के संबंध में छोटी पुस्तिकाओं के माध्यम से स्वास्थ्य शिक्षा दी गई। दूसरे चरण के रूप में अन्य आम विषयों पर स्वास्थ्य शिक्षा (विशेष रूप से कैन्सर) अलावा इस वर्ष फर्स्टएड बाक्स की सुविधा मुहैया कराने, एवं प्रति दो माह पश्चात् एक बहिरंग सेवा देने का निर्णय भी लिया गया। इस वर्ष विश्व स्वास्थ्य संगठन को एक योजना बनाकर प्रस्तुत करने का भी विचार है ताकि विकास की गति में तेजी आ सके।

बेंगलोर की डा० रानी आचार्या एवं डा० रमामनी, बम्बई के डा० लारेंस अज़ावेदो, एवं डा० सरोजनी जितेन्द्र, मद्रास की सिस्टर केसिल्डा एव डा० मंजुला क्रिश्नास्वामी, कालीकट के डा० सुरेश कुमार, कटक के डा० सुखदेव नायक, पैलिएटिव केयर के नए उभरते सितारे हैं जिन्होने न सिर्फ इस विषय की विशेषता हासिल की है परन्तु वे पैलिएटिव केयार विकास हेतु पूरी रीति से समर्पित भी हैं।

स्वंयसेवकों की भूमिका

जनप्रतिनिधियों को भी स्वयंसेवक या वालंटियर्स के रूप में आगे आने की आवश्यकता है इस सेवा के अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति जो वांसुधैव कुटुम्बकम् एवं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय में विश्वास रखता हो, अपने आपको उपयोगी सदस्य के रूप में स्थापित कर सकता है जिसके अन्दर सेवा भावना, सहनशीलता, विश्वासयोग्यता सुनने का गुण, वातावरण को हल्का बनाने के लिए विनोदी स्वभाव ईश्वर पर अटूट विश्वास, जीवन में निश्चित उद्देश्य, विपरीत-परिस्थितियों को संभालने की सूझबूझ, व्यवहार कुशलता मरीज के भेदों को गुप्त रखने की क्षमता, टीम के सदस्य के रूप में काम करने की योग्यता एवं परिस्थितियों की गंभीरता को समझने की क्षमता हो। स्वंयसेवकों को एक विशेष ट्रेनिंग व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता होती है। मालिश करने या सहलाने या मात्र छूने, रोगी को साफ सफाई करने उसका भोजन बनाने, बाल संवारने, नहाने, कमरे को सजाने, बगीचे को दुरूस्त रखने, सन्देशवाहक के रूप में कार्य करने, अखबार पढ़कर सूनाने, ड्राइवर के रूप में मरीज को अस्पताल लाने ले जाने, पालतू जानवरों, पक्षियों की देखभाल में मदद करने आदि जैसे अनेक छोटे छोटे कार्यों को करने के द्वारा वे अपनी योग्यता को प्रमाणित कर सकते हैं।

परिवार के सदस्यों की भूमिका

परिवार के सदस्यों को भी रोगी की सेवा का अधिक से अधिक अवसर दिया जाना चाहिये ताकि वे मृत्यु के विषय में और ज्यादा जान सकें एवं जीवन की बहुमूल्यता को समझ सकें।

मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि उपचारिकाएं (नर्सेज) इस चुनौती को स्वीकार करेंगी।

मैं जनता के प्रतिनिधियों से भी अनुरोध करता हूं कि उपचारिकाओं की ओर ज्यादा प्रोत्साहन दें ताकि इस सेवा में लगे मानवीय प्रयत्न कारगर हो सकें। एवं इस नोबुल प्रोफेशन की सुप्रतिष्ठा के साथ ही पैलिएटिव केयर का विकास हो सके।

उपचारिकाओं की भूमिका

पैलिएटिव केयर में उपचारिकाओं या नर्सेज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि दयालुता एवं व्यक्तिगत सेवा इसके आधार स्तम्भ हैं अत: बगैर उपचारिकाओं के पैलिएटिव केयर एक सामजिक ढोंग ही होगा। उपचारिकाओं को भी यह समझना आवश्यक है कि ऐसे रोगी पूरी तौर पर साफ़ सफाई, खानपान, मल्हम पट्टी मनोरंजन एवं सामाजिक मान प्रतिष्ठा के लिए उन्ही पर निर्भर होते है. विशेषज्ञ उपचारिकाएं इन सभी पहलुओं पर विस्तार से योजना बनाकर इस सेवा की महत्वपूर्ण कड़ी बनी रहती है; वस्तुत: मृत्युशैय्या पर पड़ा व्यक्ति उपचारिका की जिम्मेदारी है। चिकित्सक एवं उपचारिकाएं इस व्यवस्था में कंधे से कंधा मिलाकर एक दूसरे के सहयोगी बने रहते हैं।

WARNING

Members are requested to keep a vigilant look out for institutions which call themselves "Nursing Schools/ Nursing Training Centres", giving ad hoc on-the-job training to vulnerable young girls, who are not aware that such institutions are not recognised by State and National Nursing Councils and individuals trained therein are not permitted to practise Nursing or work as qualified Nurses/ANMs. All members are urged to warn the would-be aspirants of our profession to avoid falling into such traps. Please bring to your TNAI State Branch Officers' notice existence of such institutions as soon as possible to empower and enable the TNAI to maintain the standards of Nursing and Nursing Education.

CORRIGENDUM

In the Obituary of Ms. Champawati Kashinath Lokare, *NJI*, July 1995 (Pp. 164-165): Read: She held various posts, viz., Sister Tutor, Assistant Matron and Nursing Superintendent in various government institutions of Maharashtra, till her retirement in 1985 and thereafter did an assignment survey for Rotary Club. During her career she was well known for her dedication, professional dignity and leadership abilities.

The omission of certain portions in the write up is regretted.

—Ed., *NJI*